'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८८ | वाराणसी, गुरुवार, ६ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

बाबारीशी (कश्मीर) २०-७-'५९

भाईचारे और कुनबे की भावना से ही तरक्की मुमकिन है

आपको मालूम है कि आठ साल से भी ज्यादा समय हो गया है, हम हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में पद-यात्रा कर रहे हैं। आज आपके यहाँ पहुँचे हैं। अब कल कश्मीर-घाटी में दाखिल होंगे। हमारी यात्रा में छोटे-छोटे देहात आये, बड़े-बड़े शहर आये, जंगल आये, पहाड़ आये और नदियाँ भी आयीं। जहाँ बिल्कुल कम बस्ती है, वहाँ भी हम पहुँचे। सभी जगह लोगों ने हमारी बात बहुत प्यार से सुनी है।

छोटी जमात में बोलने का आनन्द

अभी आप सौ-डेढ़ सौ लोग बैठे हैं, वैसे ही जब हमारे सामने छोटी जमातें बैठती हैं, तब हमें अपने विचार सुनाने में बड़ी खुशी होती है। छोटी जमात के सामने हम दिल खोलकर बोलते हैं। अहमदाबाद जैसे शहर में तीन-तीन लाख लोगों को भी हमने अपनी बातें सुनायी हैं। लाखों की सभा में लोग हमारी बात खामोशी से सुनते हैं तो हमें खुशी होती है। लेकिन आज जैसी छोटी जमात होती है और वह हमारी बात खामोशी से सुनती है तो हमें और ज्यादा खुशी होती है। लगता है कि जैसे एक कुनबे में माँ, बाप, भाई, बहन आदि सभी एक साथ बैठते हैं, वैसे ही हम यहाँ बैठे हैं और बातें कर रहे हैं। लाखों लोग जब हमारी बातें सुनते हैं तो परिवार जैसा मालूम नहीं पड़ता। छोटी जमातों में ही परिवार जैसा मालूम पड़ता है।

परिवार का प्यार गाँव में लागू हो

परिवार में क्या होता है ? लोग कमाते हैं। किसीकी कमाई एक रुपया होती है तो किसीकी बारह आना। किसीकी आठ आना होती है तो किसी की चार आना। लेकिन सब कमाई इकट्ठी करते हैं और वह सारे परिवार की है, ऐसा मानते हैं। घर में यह 'मेरी कमाई' यह 'तुम्हारी कमाई' ऐसी भाषा नहीं होती है। सभी कहते हैं कि यह 'हमारी कमाई' है। 'हमारी' कहने से सबको तसल्ली होती है, दिल को सुकून होता है और प्यार हासिल होता है। सारी कमाई इकट्ठी करके लोग हिल-मिलकर खाते हैं। कोई यह नहीं कहता कि जो एक रुपया कमायेगा, वह एक रुपये का खायेगा और जो चार आना कमायेगा, वह चार आने का खायेगा। हर परिवार में यही होता है कि जिसे जितनी जरूरत है, भूख है, वह उतना खायेगा। सब कमाई मुश्तरका शामिल होती है। इससे हम परिवार में बड़े सुख और चैन से रहते हैं।

परिवार में मिल्कियत अलग-अलग नहीं होती। अगर कल ऐसा कानून बन जाय कि परिवारों में भी अलग मिल्कियत होगी तो आज जो खुशी है, मुहब्बत है, प्यार है, वह हरगिज नहीं रह सकेगा। आज घर में, परिवार में एकत्र मिल्कियत और कमाई है। इसीलिए यह 'घर' कहलाता है। मैं कहना चाहता हूँ कि आप यही बात गाँव में भी लागू कीजिये।

प्रतिद्वन्द्विता इन्सानियत के खिलाफ

आज गाँव में कोई सौ एकड़ का मालिक है तो कोई दो एकड़ का। कोई बहुत जमीनवाला है, कोई बेजमीन है। कोई मालिक है, कोई मजदूर। इस बात से गाँव के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। घर में सबपर बड़ा प्यार किया जाता है और गाँव में पड़ोसी पर प्यार करने में कंजूसी बरती जाती है। घर में प्यार और समाज में होड़ चलती है। मेरे घर में खाने के लिए मिठाई है, पकान्न है। पड़ोसी के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं। लेकिन मैं मजे से मिठाई खा रहा हूँ। उसकी और मेरी कमाई अलग है। उसके लिए मैं जिम्मेवार नहीं हूँ—यह जो खयाल है, वह इन्सानियत के खिलाफ है और अल्लामियाँ के मर्जी के खिलाफ है। अल्लामियाँ ने हमें एक ही नूर (रोशनी) से पैदा किया है और हुक्म दिया है कि एक-दूसरे पर प्यार करो। एक-दूसरे के लिए दिल खोलो। लेकिन हमने प्यार को घर में कैद कर रखा है। नतीजा यह हुआ है कि आज कोई सुखी नहीं है। पड़ोसी के पास ७ सेर ताकत है और मेरे पास १० सेर। हमारी ताकत अगर एक-दूसरे से टकरायेगी तो मुझे १०-७=३ सेर का लाभ ही मिलेगा। इससे मेरा भी नुकसान होगा और उसका भी नुकसान ! इसके बजाय हमारी ताकत एक-दूसरे की मदद करेगी तो हम दोनों को १०+७=१७ सेर का लाभ होगा।

ताकत के टुकड़े न हों

आज जोड़ने के बदले तोड़ने का काम हो रहा है। मेरे दो हाथ और आपके दो हाथ मिलकर चार होते हैं। पर वे एक-दूसरे को काटेंगे तो २-२=० होगा। इसलिए गाँववालों को जो ताकत है, वह इकट्ठा होनी चाहिए। हम चाहते हैं कि जैसे घर में

'हमारी' बात चलती है, वैसे गाँव में भी 'हमारी' चलनी चाहिए। यह हवा, यह पानी, यह रोशनी भगवान ने जैसे मेरे लिए पैदा की है, वैसे ही सबके लिए पैदा की है। जमीन भी भगवान ने पैदा की है और सभीके लिए पैदा की है। इसलिए जमीन पर सबका हक है। अन्न पैदा करने के लिए यह जमीन सबको मिलनी चाहिए।

मदद के बिना काम नहीं चलेगा

मैं जानता हूँ कि कश्मीर में जमीन कम है, लेकिन आपको यह मालूम होना चाहिए कि एक प्रदेश इससे भी कम जमीन-वाला है। जिसे केरल कहते हैं। मैं वहाँ हो आया हूँ। जैसे हिन्दुस्तान का कश्मीर एक सिरा है, वैसे ही केरल दूसरा सिरा है। वहाँ जमीन बहुत ही कम है। एक स्क्वेअर मील (square mile) में वहाँ १२०० लोग रहते हैं। इसके बावजूद वहाँ भी लोगों ने जमीन दान दी है। क्योंकि जमीन कम है, इसलिए हम उसमें भी 'मेरा' मेरा' करते रहेंगे तो हमारे मसले हल नहीं होंगे। इस-लिए हमें एक-दूसरे पर प्यार करना चाहिए और सबको मिलकर गाँव के बारे में सोचना चाहिए। इससे अनाज की और प्यार की उपज बढ़ेगी। माली (भौतिक) हालत के साथ अखलाकी (नैतिक) ताकत बढेगी, तब इन्सान तरक्की करेगा। आज सैलाब (बाढ़) आया और सब लोगों का नुकसान हुआ। ऐसी हालत में हम एक-दूसरे को मदद न करें तो सरकारी मदद पर कहाँ तक दारोमदार रखेंगे? गैरजानिबदारी से मदद कैसे पहुँचायी जायेगी। मुश्तरका गाँव हो, तभी यह सवाल हल हो सकता है।

सब्र की जरूरत

आज एक भाई कह रहे थे कि अगर 'हमारी जमीन', यह बात सही है तो यह माननेवाले को फौरन जँचनी चाहिए कि नहीं? "जँचनी चाहिए। लेकिन इसके लिए सामनेवाले का दिमाग साफ होना चाहिए" यह मैंने जवाब दिया। मैंने उसे कहा कि कभी-कभी सामनेवाले का दिमाग साफ नहीं होता है, इसलिए सब्र होना चाहिए। आठ साल से हमारा यह सब्र चल रहा है। घर में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना, यह सब्र नहीं है। काम करते रहना चाहिए। धीरे-धीरे लोग अवश्य समझ जायेंगे। मान लीजिये कि मैं नेक बात समझा रहा हूँ और मेरे समझाने के अनुसार जमीन की मिल्कियत जल्दी खतम हो जाती, जहाँ मेरा लफ्ज निकला, वहाँ फौरन उसका अमल होता और हिंदुस्तान के बाशिंदे जिंदगी में बदल कर लेते—तो मैं तो घबड़ा जाता। जो काम बिना सोचे-समझे किया जाता है, वह टिकता नहीं। धीरे-धीरे समझकर किया हुआ काम टिकता है। इसीलिए जब लोग जल्दी अमल नहीं करते तो मुझे खुशी होती है। लोग धीरे-धीरे समझकर इस काम को उठा लेंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

आठ साल से भूदान का काम चल रहा है। मैं घूम रहा हूँ। अल्लामियाँ मुझे घुमा रहा है, इस बात की मुझे खुशी होती है। जब लोगों को मेरी बात समझ में आ जायेगी, तब वे इसे उठा लेंगे। मेरी यह भावना है कि जो लोग मेरी बात आज नहीं मानते, वे भी माननेवाले हैं। कुछ लोग आज के माननेवाले हैं, कुछ कल के माननेवाले हैं और कुछ लोग परसों के माननेवाले है। जितने लोग हैं, वे सब के सब इस बात को माननेवाले हैं ही। क्योंकि इस बात में हक है।

मुख्तलिफ तहजीबों का समन्दर

मैं पीरपंजाल होकर यहाँ आ रहा हूँ। बीच में बहुत बड़ा जंगल है। हमारे साथ जो जंगल-ऑफिसर थे, उन्होंने हमसे कहा कि जिस जंगल में मुख्तलिफ दरख्त होते हैं, उस जंगल की तरक्की होती है, वह जंगल खूब बढ़ता है और जिस जंगल में एक ही किस्म के पेड़ होते हैं, वह जंगल बढ़ता नहीं है। उसपर से मैंने सबक लिया कि हिंदुस्तान जितना बढ़ेगा, उतना ज्यादा दूसरा मुल्क नहीं बढ़ेगा। क्योंकि हिंदुस्तान में मुख्तलिफ (अलग-अलग) जमाते हैं। जिस मुल्क में एक ही जात के, कौम के लोग रहते हैं, वहाँ नजरिया तंग होता है। जहाँ बहुत-सी जात-जमात और कौम के लोग रहते हैं, वहाँ तरक्की होती है—बशर्ते कि लोग आपस में प्यार से रहें, झगड़ें नहीं। हिंदू, जैन, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध आदि मुख्तलिफ जमातें हिंदुस्तान में, इस कश्मीर में करीम जमाने से रह रही हैं। हमारे बड़े मशहूर बंगाली शायर रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा है कि "एइ भारतेर महामानवेर सागर तीरे।" "हमारा हिन्दुस्तान एक महान् समन्दर है। यहाँ मानवों का एक समन्दर है।" दुनियाभर से मुख्तलिफ कौमें यहाँ आयीं और रहती हैं। चीन, जापान, एशिया-माइनर, इरान, मध्यएशिया, केनिया, जावा, सुमात्रा आदि स्थानों से यहाँ अनेकों कौमें आयीं। उनकी मुख्तलिफ जातियाँ और जबानें हैं।

अब यहाँ मैं आया हूँ तो मैं सीधा आपकी भाषा उर्दू में बोल रहा हूँ। आपके दिलों तक मेरे शब्द पहुँचते हैं। लेकिन जब मैं दक्षिण हिन्दुस्तान में घूमता था, तब मेरी तकरीरों का तर्जुमा होता था; क्योंकि मैं उनकी जबान में तकरीर नहीं कर सकता था। उनकी जबान हमारी जबान से अलग है। हमने यहाँ मुख्तलिफ जबानें इकट्ठा की हैं। इस्लाम, हिंदू, बौद्ध, जैन, यहूदी, ईसाई—इस तरह कुल मजहब भी यहाँ इकट्ठे हुए हैं। अनेक जबानों का होना, अनेक जातियों का होना, और मुख्तलिफ मजहबों का होना हमारे लिए एक जीनत है, गौरव की बात है। एक ही सुर रहेगा 'सा, सा, सा' तो संगीत नहीं बनेगा। सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सा, ऐसे मुख्तलिफ सुर होते हैं, तभी संगीत बनता है। वैसे ही हिंदुस्तान में मुख्तलिफ जबानें, मजहब, जातियाँ हैं। वे ही सब मिलकर सुंदर संगीत बनेगा। यह हमारे लिए खुशकिस्मती है।

भाईचारा ही सुख का जरिया

घर में भाई-भाई प्यार से रह सकते हैं और एक-दूसरे के दुश्मन भी बन सकते हैं। भाई-भाई जब दुश्मनी करते हैं, तब बेरहमी से दुश्मनी करते हैं। दुश्मन भी दुश्मनी करता है, लेकिन वह हमारे उतने भेद नहीं जानता, जितने कि भाई जानता है। भाई सिर्फ संगदिल नहीं, तंगदिल भी बनता है। दुनिया में ज्यादा से ज्यादा प्यार दोस्त करता है या भाई करता है। दुश्मन दोस्ती नहीं कर सकता है और दोस्त दुश्मनी नहीं कर सकता है। लेकिन भाई दोनों कर सकता है। इसलिए हिंदुस्तान में हम सब भाई प्यार से रहेंगे तो बहुत बड़ी इज्जत होगी, जीनत होगी, इसमें कोई शक और शुबहा नहीं है। अगर हम ऐसा न कर सकें तो यहाँ झगड़ों की कोई इन्तहा (सीमा) नहीं रहेगी। ये झगड़े एक कौम में भी हो सकते हैं। सीया और सुन्नी झगड़ते हैं। पंजाब के अखबारों में सिखों के झगड़ों की खबरें आती हैं। ये सब कौम के झगड़े हैं।

आज की यह जियारत की जगह है। यहाँ बड़े प्यार से और श्रद्धा से लोग आते हैं, इबादत करते हैं। इसलिए यहाँ जमीन के जितने मालिक हैं, वे सब अपनी मालकियत का एक हिस्सा समाज के लिए दें। यहाँसे इर्दगिर्दवालों को रोशनी मिलनी चाहिए, यही हमारी ख्वाहिश है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पट्टण (कश्मीर) २२-७-'५९

मैं नये जमाने का पैगाम लाया हूँ

अभी यहाँ हमसे मिलने के लिए बच्चे आये थे। हमने उनसे एक हिसाब पूछा कि ६४ साल की उम्र में हम यहाँ पहली बार आये तो दूसरी बार आने के लिए कितने साल लगेंगे? '१२८ साल', बच्चों ने जवाब दिया। हमने फिर पूछा—क्या खुदा इतनी उम्र हमें देगा? हाँ। इतनी उम्रवाले लोग दुनिया में हैं। लुकमान हो गये। वे बारह सौ साल जीये थे!

"पूछा लुकमान से जिया तू कितने रोज?
दस्ते हसरत मल के बोला चन्द रोज।"

मतलब यह कि लुकमान को बारह सौ साल की जिन्दगी भी नाकाफी मालूम हुई। लेकिन इन दिनों तो सौ साल जीना भी अजीब लगता है। इसलिए आपके गाँव में हमारी यह पहली और आखिरी मुलाकात है। इसी समय हमसे जितना भी फायदा उठा सकें, उतना उठा लेना आपका फर्ज है।

अल्ला के गजब का सबब

कश्मीर में कई राजनैतिक पार्टियाँ हैं। एक है—"नेशनल कान्फ्रेन्स" और दूसरी है "डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स"। आज कुछ डेमोक्रेटिक कान्फ्रेन्स के लोग हमसे मिलने आये थे। उनसे बातें हुईं। उनकी दो बातें हमें जँच गयीं। उन्होंने पहली बात तो यह कही कि "हम इस्लाम के माननेवाले हैं। इसलिए हम मानते हैं कि यह जो सैलाब आया है, वह हमारी बुराइयों का नतीजा है। यह इस्लाम का एक अकीदा (खयाल) है कि जब हम खुदा को भूल जाते हैं, तभी ऐसी आफतें आती हैं। यदि हम उसे न भूलें तो कभी तबाही नहीं हो सकती।" आज जब बच्चों ने हमसे पूछा कि बाढ़ क्यों आयी? तो हमने वही जवाब दिया, जो डी० एन० सी० के भाइयों ने दिया।

हमारी बुराइयों के कारण अल्ला का गजब हम पर उतरता है। जब हम यह बोलते हैं, तब सिर्फ तोते की तरह बोलते ही हैं, इस पर एतबार नहीं करते। सही माने में यह बात हमारी जबान पर तो है; पर दिल में नहीं है। क्योंकि दरअस्ल हम ऐसा मानते तो अपने अन्दर दिल में पैठते और यों सोचते कि हममें क्या बुराइयाँ हैं? हम कर क्या रहे हैं? हमारा एक-दूसरे के साथ जो बर्ताव है, वह सही है या गलत? कोई भी आदमी इस सम्बन्ध में गहराई से सोचे और अपने अन्दर की तरफ देखे, अपने आपको जाँचे तो वह सुधर सकता है। आजकल आदमी अपने को नहीं देखता। अक्सर दूसरों की नुक्ताचीनी करता है। इसलिए बजाय इसके कि हम दूसरों की नुक्ताचीनी करें, अपने ही दोष देखा करें तो ठीक है।

नाकामयाब खानगी मालकियत

हमारा यह मानना है कि अल्ला का गजब तब तक जारी रहेगा, जब तक हम खानगी मालकियत कायम रखेंगे। आज दुनिया में जितने दुःख मौजूद हैं, उनका मूल कारण है—खानगी मालकियत। यह घर, यह खेती, यह दौलत सब 'मेरी' 'मेरी' कहते हैं। यह 'मेरी' ही हमें तकलीफ देती है। इस तकलीफ को और दुनिया की कशमकश को मिटाने के लिए आप सिर्फ 'मेरी' की जगह 'हमारी' दाखिल कर दीजिये। आप यों कहना सीखिये कि यह घर हमारा है, यह खेती हमारी है, यह दौलत हमारी है और ये सभी चीजें हमारी हैं। 'मेरी' कुछ नहीं, सब 'हमारी' हैं। यहाँ तक कि यह शरीर भी मेरा नहीं, सबका है, सबके लिए है, जो सिर्फ मेरे सुपुर्द किया गया है। ताकि इसके जरिये सबकी खिदमत की जा सके। एक भाई ने हमसे पूछा कि यह जद्दोजहद कायम ही रहेगा या मिटेगा? हमने कहा कि अगर इसका बुनियादी कारण मालूम कर मिटाया जाय तो मिट सकेगा। बुनियादी कारण है—खानगी मालकियत!

अब सियासत नहीं चलेगी

आज यहाँ एक भाई ने कुछ दान दिया है। दूसरे भाई भी देंगे। जब हमने जम्मू-कश्मीर स्टेट में प्रवेश किया, तब रोज दान मिलता था। लेकिन यहाँ हर रोज नहीं मिलता। पहले हर रोज दान मिलने की वजह यह थी कि हमारा विचार समझे हुए लोग जनता के पास पहुँचते थे, लोगों को विचार समझाते थे और दान-पत्र लाते थे।

यहाँ मैं देखता हूँ कि लोग मुझे ही अपनी सियासत (राजनीति) समझाते हैं। क्या हम सियासत को चाटें? क्या उससे लोगों के दिल जुड़नेवाले हैं? यहाँ कश्मीर-घाटी में कितने लोग हैं? बीस लाख। सियासत के कारण उनके भी टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। कुछ लोग इस पार्टी में हैं, कुछ उस पार्टी में। जहाँ ऐसे टुकड़े-टुकड़े हों, वहाँ ताकत कैसे बनेगी? मैं आठ साल तक घूमने के बाद यहाँ आया हूँ तो सियासत सम्बन्धी बातें सुनने आया हूँ? नहीं! मैं चाहता हूँ कि गाँव-गाँव के लोग अपनी ताकत को पहचानें। आप यह निश्चित समझ लीजिये कि जब तक आप पर कोई न कोई सियासी पार्टी हुकूमत चलाती रहेगी, तब तक गाँव की ताकत मजबूत नहीं बन सकेगी।

पार्टियाँ दिलों को तोड़ती हैं

हुकूमत करनेवाली पार्टी अच्छी रही तो लोग सुखी बनेंगे और अच्छी न रही तो लोग दुःखी बनेंगे। अकबर बादशाह आया तो जनता सुखी बनी और औरंगजेब आया तो दुःखी। पहले एक आदमी के हाथों में नसीब सौंप देते थे। लेकिन अब वैसा नहीं करते। अब जम्हूरियत (लोकशाही) आयी है। सारी सत्ता लोगों के हाथों में है। फिर भी यह निश्चित है कि इस समय भी सच्ची जम्हूरियत नहीं आयी है। इसका नतीजा यह हुआ है कि हुकूमत चन्द लोगों के हाथों में है। वे चन्द लोग अच्छे होते हैं तो काम अच्छा होता है और बुरे होते हैं तो बुरा होता है। इसलिए पार्टीवाली जम्हूरियत रहेगी, तब तक दिलों के टुकड़े होते रहेंगे।

पार्टी पॉलिटिक्स जहाँ चलता है, वहाँ एक पार्टी के हाथ में हुकूमत होती है और दूसरी पार्टी के हाथ में हुकूमत नहीं होती। दूसरी पार्टी पहली पार्टी के साथ झगड़ती रहती है, वह भी हुकूमत अपने हाथों में लेना चाहती है। दोनों पार्टियाँ हुकूमतपरस्त (सत्ता-पूजक) होती हैं। दोनों का नाचना हुकूमत के इर्दगिर्द होता है। इसलिए दोनों में कशमकश जारी रहती है। हुकूमत-वाली पार्टी के लोग अपनी खूबियों को, कारनामों को बढ़ा-चढ़ा-कर लोगों के सामने रखते हैं और विरोधी पार्टीवाले उनके कसूर, कमियों और दोषों को जाहिर करते हैं। दोनों हुकूमत-

परस्ती के कारण गुण-दोषों के कहने-सुनने में ही लगे रहते हैं। नतीजा यह होता है कि खिदमतगार कोई नहीं रहता। हर कोई यही कहता है कि हमारे हाथ में हुकूमत रहेगी तो हम आपको 'जन्नत' में ले जायँगे और दूसरों के हाथ में हुकूमत रही तो वे आपको 'जहन्नुम' में ले जायँगे। कोई लोगों को यह नहीं कहता कि 'जन्नत' और 'जहन्नुम' खुद आपके हाथों में हैं। आपको वहाँ ले जानेवाला आपके सिवा और कोई नहीं हो सकता।

अपनी ही ताकत काम देगी

"कोई शख्स दूसरे की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता। हरएक को अपना-अपना बोझ उठाना पड़ेगा।" यही बात कुरान में भी कही गयी है, आप बात को समझिये। क्या मेरा बोझ बक्षी साहब उठायेंगे? अल्लामियाँ के सामने मैं भी खड़ा रहूँगा और बक्षी साहब भी खड़े रहेंगे। मुझे क्या पूछा जायगा? अपने कारनामे। बक्षी साहब को? बक्षी साहब के कारनामे। मुझे बक्षी साहब के कारनामे नहीं पूछे जायेंगे और बक्षी साहब को मेरे कारनामे नहीं पूछे जायेंगे। सभीको अपने-अपने कारनामे पूछे जायेंगे। इसलिए आपको अपनी और अपने गाँव की ताकत को समझना होगा। ऐसी ताकत आप पैदा करेंगे, तभी पैदा होगी। इसके वास्ते लोगों को खिदमत्त-परस्त (सेवा-पूजक) होने की जरूरत है। मैं चाहता हूँ कि हर इन्सान खिदमत-परस्त हो। पर इन्सान की हर ख्वाहिश पूरी नहीं होती। इसलिए यहाँ कम से कम कुछ लोग तो खिदमत-परस्त रहें—जिनकी जबान पर लोग भरोसा कर सकें। आज लोगों को किसीपर भरोसा नहीं है। इस पार्टी-वाले उस पार्टी की निन्दा करते हैं और उस पार्टीवाले इस पार्टी की निन्दा करते हैं। जनता दोनों की निन्दा सुनती है और दोनों पर भरोसा करना छोड़ देती है।

मजबूरी की दुआएँ

आज सुबह जो लोग आये, वे कह रहे थे कि यहाँ जम्हूरियत (लोकशाही) पनपनी चाहिए। दुनिया में जम्हूरियत है, लेकिन वह कहाँ? क्या वह अमेरिका में पनप रही है? नहीं। मैं कहना चाहता हूँ कि अमेरिका में भी जम्हूरियत पनप नहीं रही है। वहाँ भी पूरी ताकत चन्द लोगों के हाथ में है। कल अगर 'आइक' का दिमाग बिगड़ जाय या खराब हो जाय तो वह कुल दुनिया को तबाह कर सकता है। आज आइक, मेकमिलन, ख्रुश्चेव आदि कुछ ही ऐसे लोग हैं, जिन पर सारी दुनिया का दारोमदार है। अगर अल्लामियाँ ने चाहा और उनका दिमाग बिगाड़ दिया तो हम सब खत्म हैं। आप दुआ माँगते हो कि हे खुदा! हमें अक्ल दे। लेकिन अब ऐसी दुआ माँगो कि ऐ खुदा! आइक, मेकमिलन, ख्रुश्चेव आदि को अक्ल दे।

अल्ला के बीच मुल्ला

अल्ला और हमारे बीच में है—मुल्ला। इबादत का काम हमारी तरफ से मुल्ला करेगा और सेवा का काम करेगा नुमाइन्दा! तब फिर हम क्या करेंगे? खायेंगे, पीयेंगे और रोयेंगे (अच्छी हालत के अभाव में)! इबादत और खिदमत जैसी जिन्दगी की महत्त्व की बातें हम तरजमान तथा नुमाइन्दों पर रखेंगे, तब तक हम सुखी नहीं बन सकते। अगर इत्तफाक से हम सुखी बन भी गये, तब भी वह गलत होगा। दूसरे की अक्ल से सुखी या दुःखी बनना, दोनो ही गलत है।

खिदमतगार जमात की जरूरत

डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्सवालों ने हमारे सामने दो बातें रखीं। (१) यहाँ हिन्दुस्तान की चुनाव-पद्धति लागू हो और (२) वह सुप्रीम कोर्ट के मार्फत हो। इससे क्या होगा? गैरजानिबदार (निष्पक्ष) न्याय मिलेगा।

मैंने दोनों सुझाव पसन्द किये और कहा कि ठीक है। ऐसा ही होना चाहिए और यही होगा। अब यह जितना जल्दी हो सके, उतना अच्छा, ऐसा ये लोग मानते हैं। मैंने यह बात तो मानी। लेकिन मैं यह नहीं मानता कि इतने से जम्हूरियत पनपेगी या अच्छी होगी। ऐसा तो तब होगा, जब इन जानिबदार पार्टियों के अलावा एक ऐसा समाज होगा, जो खिदमत में लगा रहेगा। इसके मानी यह नहीं है कि पार्टीवाले कुछ भी खिदमत नहीं करते। वे भी खिदमत करते हैं। किन्तु उनकी नजर 'इले-क्शन' पर रहती है।

खुदा के चेहरे—चुनाव!

कुरानशरीफ में आया है कि "खुदा के चेहरे के दर्शन के लिए हमें दान देना चाहिए।" इन पार्टीवालों के लिए 'खुदा के चेहरे' 'चुनाव' हैं। चुनाव के लिए दान! चुनाव के लिए खैरात!! खिदमत करेंगे और ये नापते रहेंगे कि हमने इतनी खिदमत की तो कितना पाया? ये पक्के बनिया हैं। दो पैसे की खिदमत के चार पैसे चाहते हैं। जरा-सी खिदमत करेंगे और केमरा से फोटो खिंचवाएँगे। इस तरह से बदले की अपेक्षा रखकर खिदमत करनेवाले लोग खिदमत में जहर मिला रहे हैं।

इन पार्टीवालों के आगे-पीछे, अन्दर-बाहर सभी जगह चुनाव का विचार रहता है। यहाँ तक कि बाबा जिनके चुनाव क्षेत्र (Constituency) में घूमता है, वहाँ भी वे लोग दौड़े-दौड़े पहुँच जाते हैं। चाहे उस वक्त पार्लमेंट हो, तब भी वे आते हैं, साथ रहते हैं और दान भी दिलवाते हैं। नहीं तो फिर चुनाव-के समय लोग उनसे पूछते हैं कि बाबा आया, तब आप कहाँ थे? पद-यात्रा में क्यों नहीं आये?

पद-यात्रा के दो मानी हैं। एक तो यह कि पाँव से चलना यानी पैदल चलना, पद-यात्रा। और दूसरा मानी है—पद-प्राप्ति के लिए पद-यात्रा। पद-प्राप्ति के लिए तमगा मिलना चाहिए। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अच्छा काम भी आप जिस मकसद से करते हैं, उसीपर उसकी कीमत निर्भर रहती है।

[चालू]

अनुक्रम

१. भाईचारे और कुनबे की भावना से ही तरक्की....
बाबारोशी २० जुलाई '५९ पृष्ठ ५७३
२. मैं नये जमाने का पैगाम लाया हूँ
पट्टण २२ जुलाई '५९ " ५७५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी